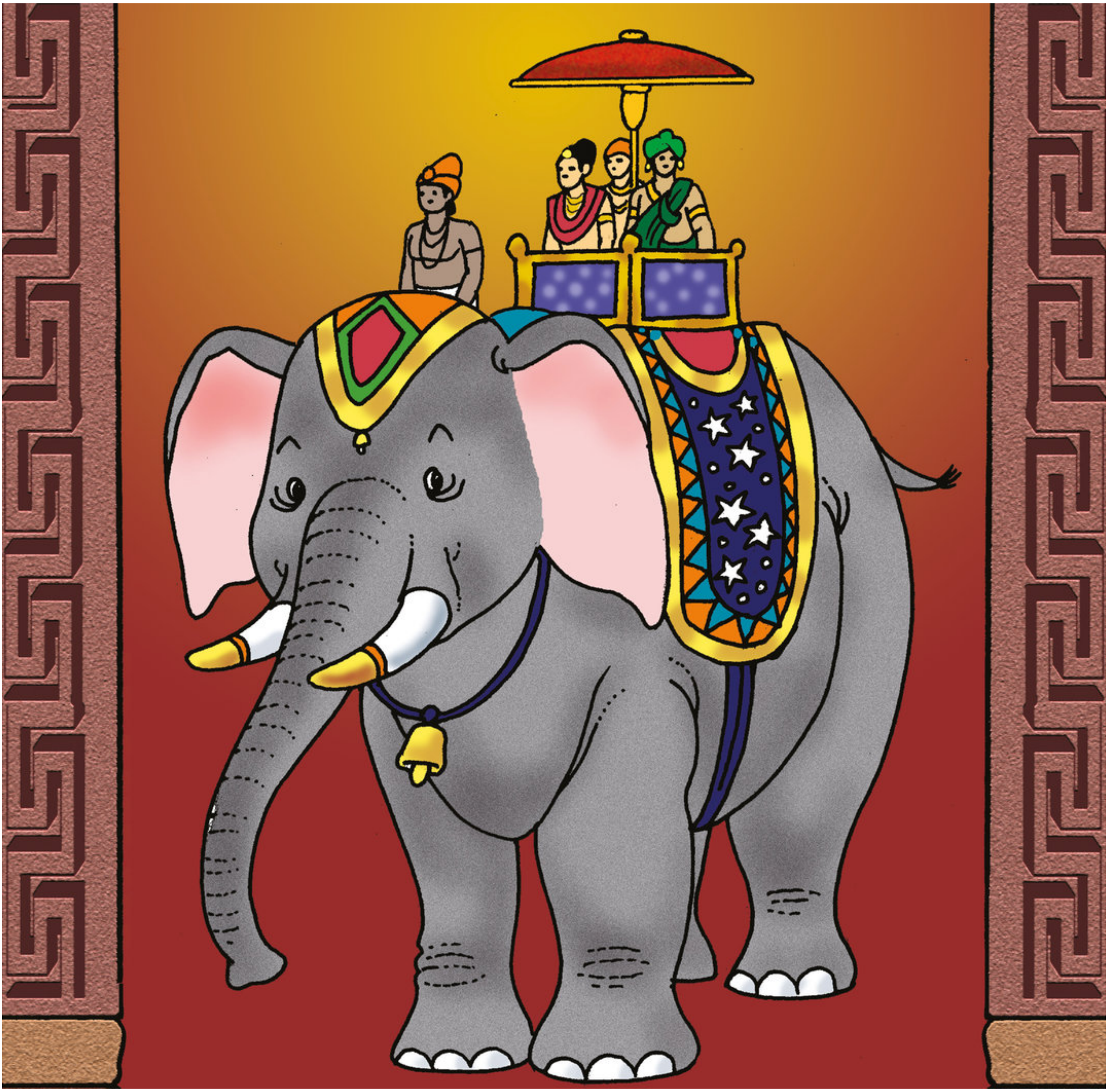

सम्राट की शोभायात्रा

Author: Subhadra Sen Gupta
Illustrator: Tapas Guha
Translator: Manisha Chaudhry

PRATHAM BOOKS

पठन स्तर ४

पार्वती और उसका भाई लक्ष्मण, सुबह-सुबह विहार के ऊँचे फाटक से अन्दर आ पहुँचे। उनके पिता एक कुम्हार थे और वे मिट्टी के सकोरे, तश्तरी, कटोरे और गिलास वहाँ पहुँचाने आये थे।

आँगन में आकर पार्वती ने अपनी टोकरी नीचे उतारी और चारों ओर देखा। आँगन के चारों तरफ़ छोटे छोटे कमरों की कतार थीं। “क्या बौद्ध भिक्षु यहीं रहते हैं?” पार्वती ने पूछा।

“हाँ,” लक्ष्मण बोला, “इन कमरों में रहते हैं और उस मन्दिर में बुद्ध भगवान की प्रार्थना करते हैं। इस जगह को विहार कहते हैं।”

वे अपनी टोकरियाँ रसोईघर की तरफ़ ले गये जहाँ दो भिक्षु, केसरिया रंग के वस्त्र पहने, खाना पकाने में व्यस्त थे।

“अच्छा! तुम दोनों कुम्हार के बच्चे हो,” एक भिक्षु ने मुस्कराते हुए पूछा,

“क्या पहली बार विहार में आये हो?”

“हाँ,” लक्ष्मण ने कहा, “कितनी सुन्दर जगह है...यहाँ बगीचे हैं, तालाब हैं...”

“आम का बाग है!” पार्वती ने जोड़ा।
“तुम्हें हमारा मन्दिर देखना चाहिये,” भिक्षु ने मुट्ठी भर ताँबे के सिक्कों से बर्तनों की कीमत अदा करते हुए कहा।

ज़रा रहस्यमयी सी मुस्कराहट के साथ वह बोला, “शायद किसी ऐसे आदमी से वहाँ मुलाकात भी हो जाये जो तुम्हें अच्छा लगे!”

जैसे वे मन्दिर के प्रधान कक्ष में घुसे उनकी आँखें खुली की खुली रह गईं। कितनी सुन्दर जगह थी!

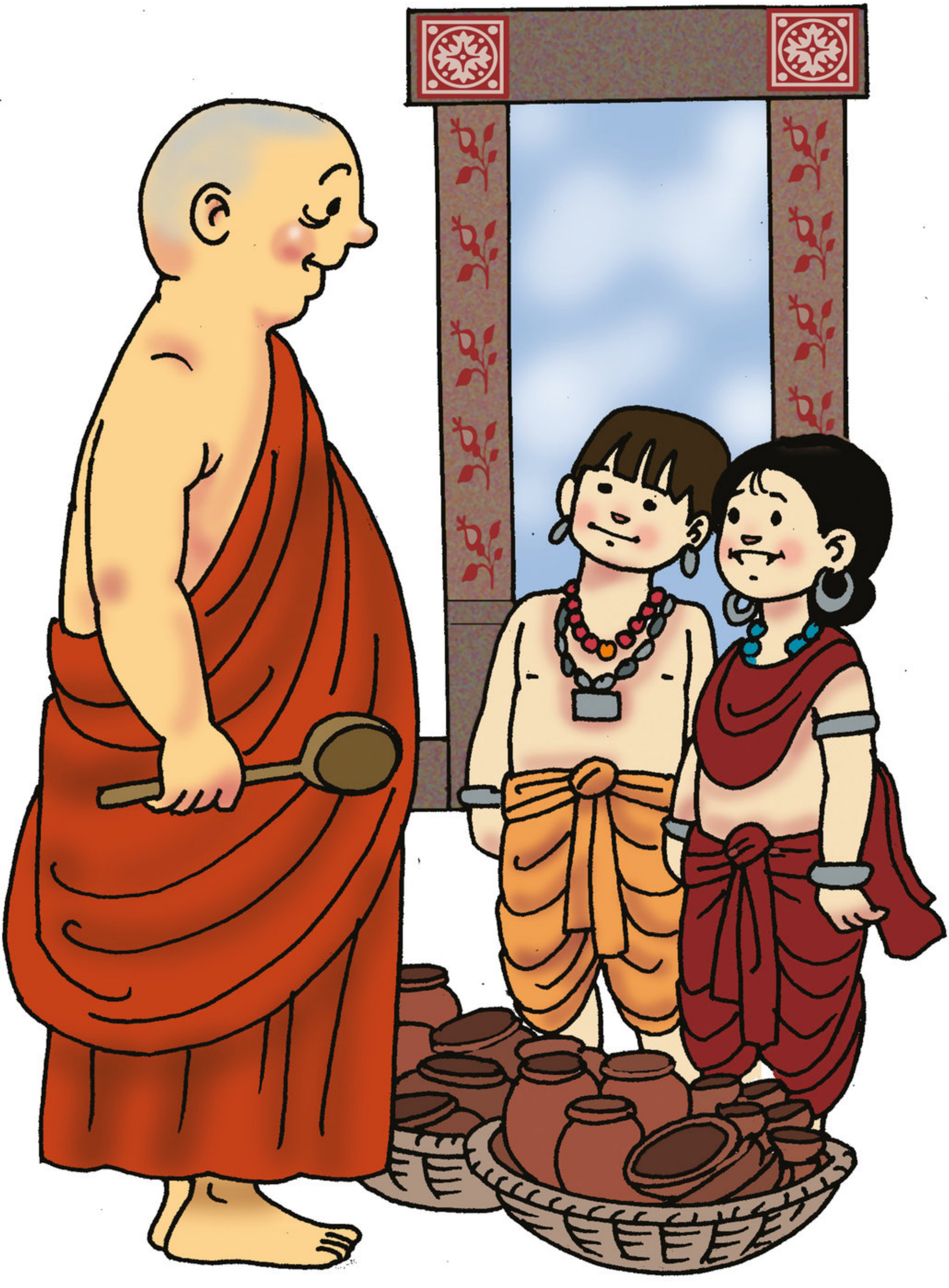

लकड़ी के खम्भों पर बारीक नक्काशी थी, दीवारों पर इतने सुन्दर चित्र और ज़मीन पर बुनी हुई नरम चटाइयाँ! उनके सामने पूजा स्थल था जहाँ एक गोल पत्थर पर बुद्ध के चरण खुदे हुए थे। यह स्थान फूलों से सजा हुआ था और धुआँ निकालती धूपबत्ती के कटोरे, उसके सामने रखे हुए थे।

पूजा स्थल के सामने बैठकर एक आदमी प्रार्थना कर रहा था- उसकी उँगलियाँ एक मनकों की माला फेर रही थीं। उसने धोती की तरह बँधी, सूती अंतरीय पहनी हुई थी। शरीर के ऊपरी हिस्से पर उसने शॉल की तरह मलमल की उत्तरीय लपेटी हुई थी। उसके गले, कानों व बाँहों पर सोने के गहने दमक रहे थे।

बच्चों की आहट पाकर उसने आँखें खोलीं।

“ओहो! माफ़ कीजियेगा श्रीमान, क्या हमने आपकी प्रार्थना में बाधा डाली?” पार्वती जल्दी से बोली।

उस आदमी ने मुस्करा कर जवाब दिया, “नहीं, ऐसी कोई बात नहीं। तुम दोनों यहाँ क्या कर रहे हो?”

“हम लोग विहार के रसोईघर के लिए मिट्टी के बर्तन लाये थे,” लक्ष्मण ने बताया, “हमारे पिता कुम्हार हैं।”

“अच्छा!” आदमी ने आगे की ओर झुक कर कहा,
“क्या तुम्हें चाक पर काम करना आता है?”
“हम कोशिश तो करते हैं,” पार्वती ने सिर हिलाया, “पर...”
“हमारे बर्तन सब टेढ़े-मेढ़े निकलते हैं!” लक्ष्मण हँसते हुए बोला।

“मुझे सबसे ज़्यादा अच्छा लगता है बर्तनों के ऊपर, रंगों से चित्र बनाना। मैं चूने से बना सफ़ेद रंग, और तेल के दियों की कालिख से बना काला रंग इस्तेमाल करती हूँ,” पार्वती ने अपनी बात जोड़ी।

“किसका चित्र बनाती हो?” आदमी ने उत्सुकता जताई।

“फूल और बादल, पत्तियाँ और पक्षी...” पार्वती ऐसे बोली जैसे सपनों की दुनिया में खो गई हो।

“आह, काश कि मैं तुम्हारे जैसे चित्र बना पाता!” वह आदमी लम्बी साँस भर कर बोला,

“पर मुझे तो सिर्फ़ तलवार उठा कर लड़ना आता है।”
“तो आप भिक्षु नहीं हैं?”

उसने सिर हिलाया, “मैं एक सैनिक था पर अब मैंने लड़ना छोड़ दिया है, क्योंकि मैं भगवान बुद्ध के उपदेश को मानता हूँ।”

“रसोई में जो भिक्षु था उसने कहा कि विहार में कोई दिलचस्प व्यक्ति है। क्या आप कोई महान व्यक्ति हैं, श्रीमान?”

वह आदमी हँसा, “नहीं, मुझे तो ऐसा नहीं लगता! मैं तो बस एक ऐसा सैनिक हूँ जो अब लड़ाई पर नहीं जाता। अब मैं महल में काम करता हूँ।”

“महाराजाधिराज सम्राट अशोक के महल में!” लक्ष्मण की आँखों में चमक आ गई। “आप तो बड़े भाग्यशाली हैं।”

“क्यों?” उस आदमी ने सवाल किया।
“क्योंकि आप तो हर रोज़ राजा को देख सकते हैं। पता है, हमने अपना पूरा जीवन पाटलीपुत्र में बिताया है पर हमने उन्हें कभी नहीं देखा।”

वह आदमी ठहाका मार कर हँसा, “मुझे नहीं लगता कि राजा में देखने लायक कोई बात भी है। वह तो देखने में ज़रा भी सुन्दर नहीं हैं।”

“बिल्कुल हैं।” पार्वती ने विश्वास के साथ कहा, “आख़िर महाराजाधिराज पूरे विश्व में सबसे शक्तिशाली सम्राट हैं।”

“अच्छा, तुम कहती हो तो ऐसा ही सही,” उस आदमी ने आसन से उठते हुए कहा। उसने उनके सर पर हाथ रखकर आशीर्वाद दिया, “मुझे लगता है तुम राजा से ज़रूर मिलोगे-क्या पता, किसी दिन तुम्हें अचानक ही मिल जायें!” मुस्कराते हुए वह आदमी चला गया।

कुछ दिनों के बाद, बच्चे अपने पिता के काम में हाथ बँटा रहे थे। लक्ष्मण मिट्टी को अच्छी तरह माँड रहा था। उसके पिता चाक पर बैठे मिट्टी के दिये बना रहे थे और पार्वती उन्हें उठा कर धूप में सुखा रही थी।

अचानक उनका दोस्त केशव दौड़ा आया और चिल्लाया, “जल्दी आओ! सम्राट की शोभायात्रा इधर की तरफ़ आ रही है।”

बिजली की तेज़ी से तीनों विहार की तरफ़ जाने वाली सड़क पर भागे।

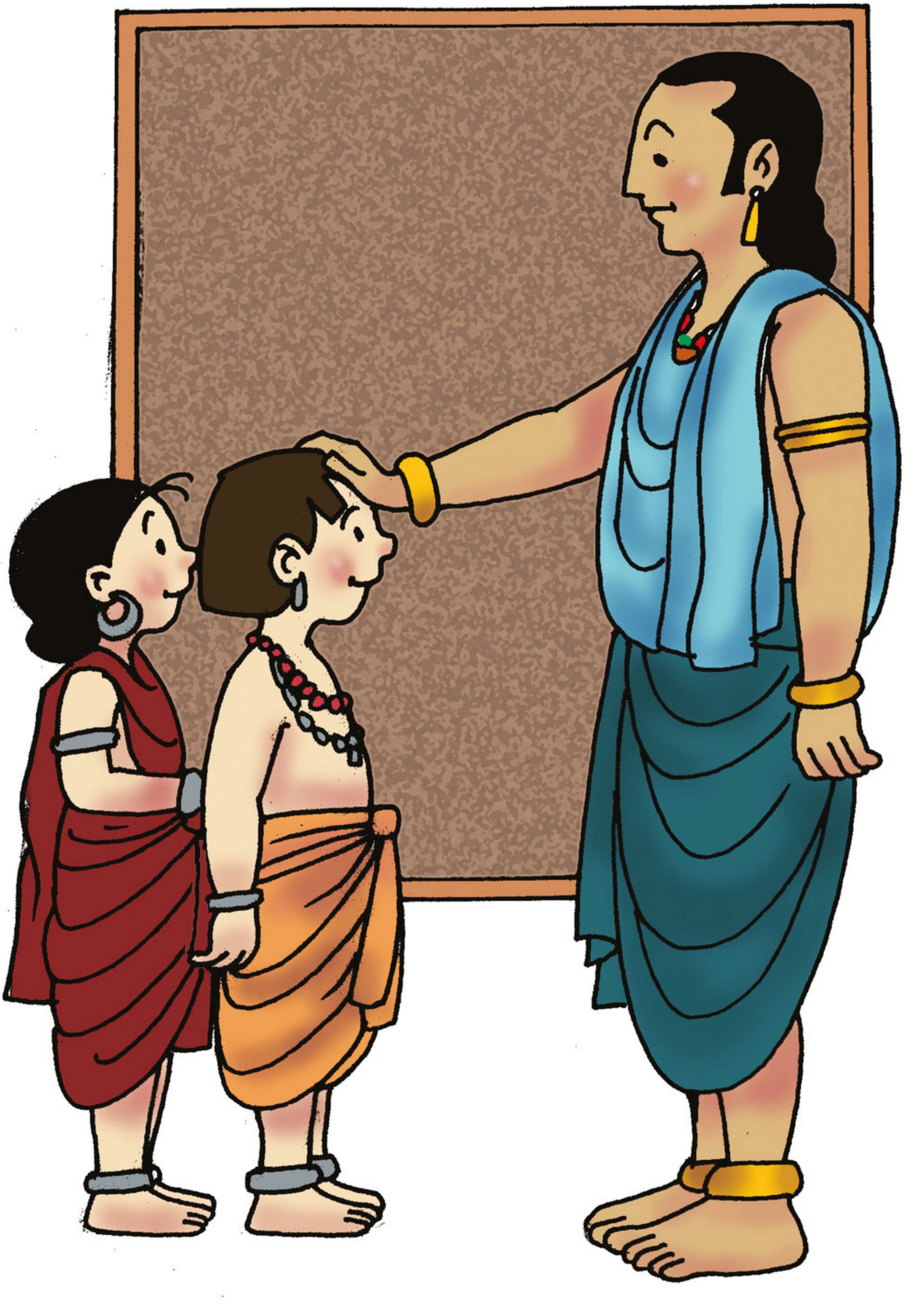

केशव ने कहा कि सम्राट अशोक और महारानी महादेवी विहार में प्रार्थना करने आ रहे थे। तीनों सड़क के किनारे गोल-गोल आँखों से सम्राट की शोभायात्रा को आता देख रहे थे।

सबसे पहले कदम मिलाते सैनिक आये, जिन्होंने हाथों में चमकते भाले उठाये हुए थे। उसके बाद हिनहिनाते घोड़ों द्वारा खींचे जा रहे रथ आये। उसके बाद आश्चर्य! स्त्री सैनिकों का एक दस्ता कदम मिलाता निकला! उन्होंने लम्बे जूते, पतलून, अंगरखे और नुकीली टोपियाँ पहनी हुई थीं। उन्होंने बड़ी तलवारें भी थामी हुई थीं।

“स्त्री सैनिक?” पार्वती अचम्भे में थी।
“तुम्हें पता नहीं था?” केशव हँसा,
“राजा साहब की रक्षा हमेशा स्त्री सैनिक ही करती हैं। ये बड़ी जाँबाज़ लड़ाकू सैनिक हैं और पहाड़ी क्षेत्रों से आती हैं।”

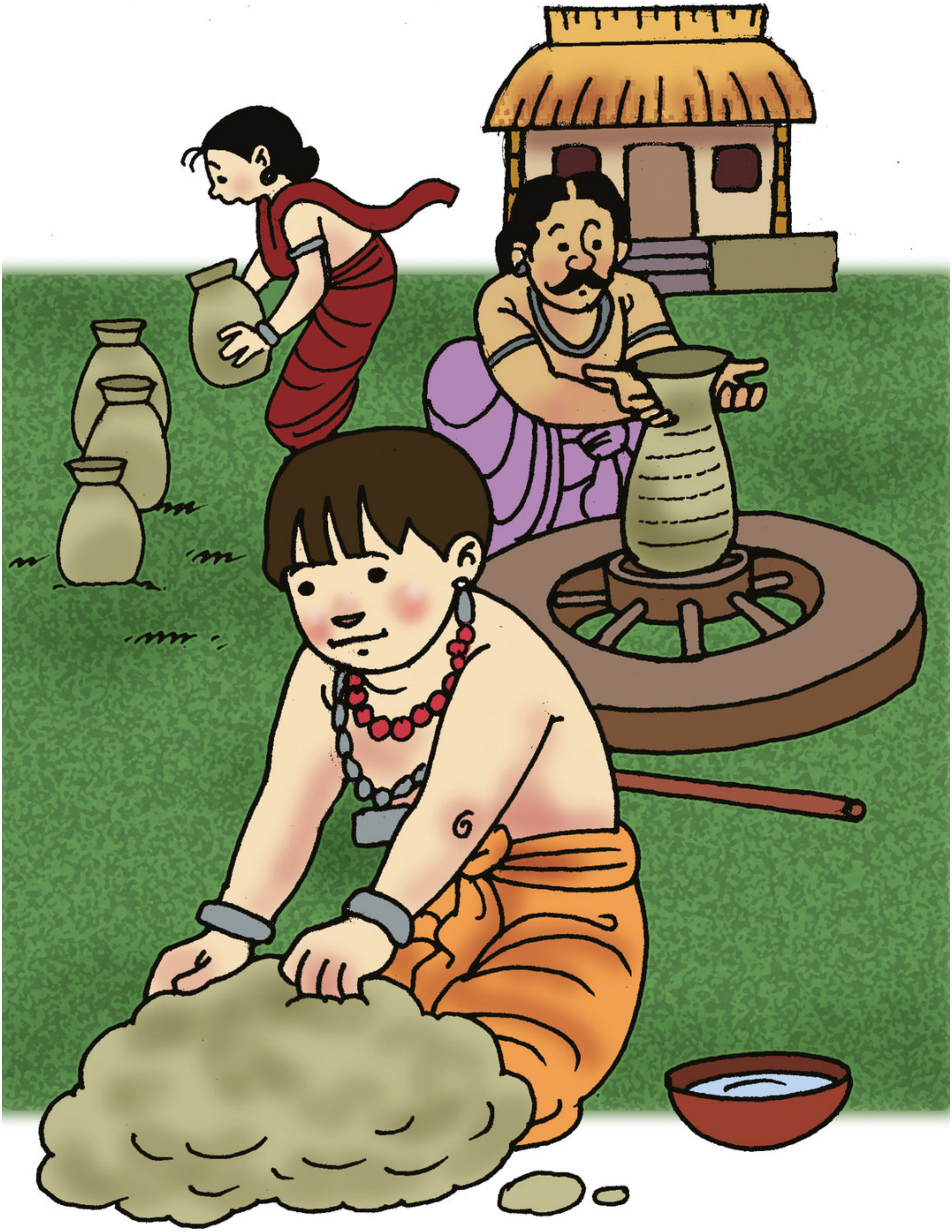

इसके बाद ढोल बजाने वालों की कतार निकलीं जो कदम ताल के लिये ढम...ढम...ढम... ढोल बजा रही थीं।

एक विशाल हाथी उनके बाद झूमता हुआ आया। उसकी सूँड और कानों पर रंगीन नमूने बने हुए थे। उसकी पीठ पर एक हौदा था। सम्राट अशोक और उनकी महारानी उस पर बैठे थे। उनके पीछे बैठा एक आदमी उनके सर के ऊपर छतरी पकड़े था। कैसा भव्य दृश्य था!

जैसे हाथी पास आया, लक्ष्मण ने राजा का चेहरा देखने के लिये नज़र ऊपर उठाई - और उसका मुँह आश्चर्य से खुला का खुला रह गया! बढ़िया कपड़े, खूब सारे गहने और सुनहरी पगड़ी पहने वही आदमी बैठा था जो उन्हें विहार में मिला था!

“पार्वती देखो,” वह चिल्लाया। “हमारा दोस्त, जो हमें विहार में मिला था!”

वे खुशी से उछलने और चिल्लाने लगे। सम्राट अशोक ने मुड़कर देखा कि शोर कहाँ से आ रहा है। जैसे ही उन्होंने बच्चों को पहचाना, उनके ओठों पर मुस्कराहट छा गई। उन्होंने अपना हाथ हिलाया। बच्चों की खुशी का ठिकाना न रहा!

केशव की आँखें फटी जा रही थीं, “क्या! क्या राजा ने तुम्हें देखकर हाथ हिलाया? तुम उनसे मिले हो क्या?”

“हाँ! विहार में मिले हैं...उन्होंने हमें आशीर्वाद भी दिया है! है न कमाल की बात?” पार्वती और लक्ष्मण ने खुशी से नाचते हुए जवाब दिया।

“सच, बड़े भाग्यशाली हो!” केशव को थोड़ी जलन हो रही थी।

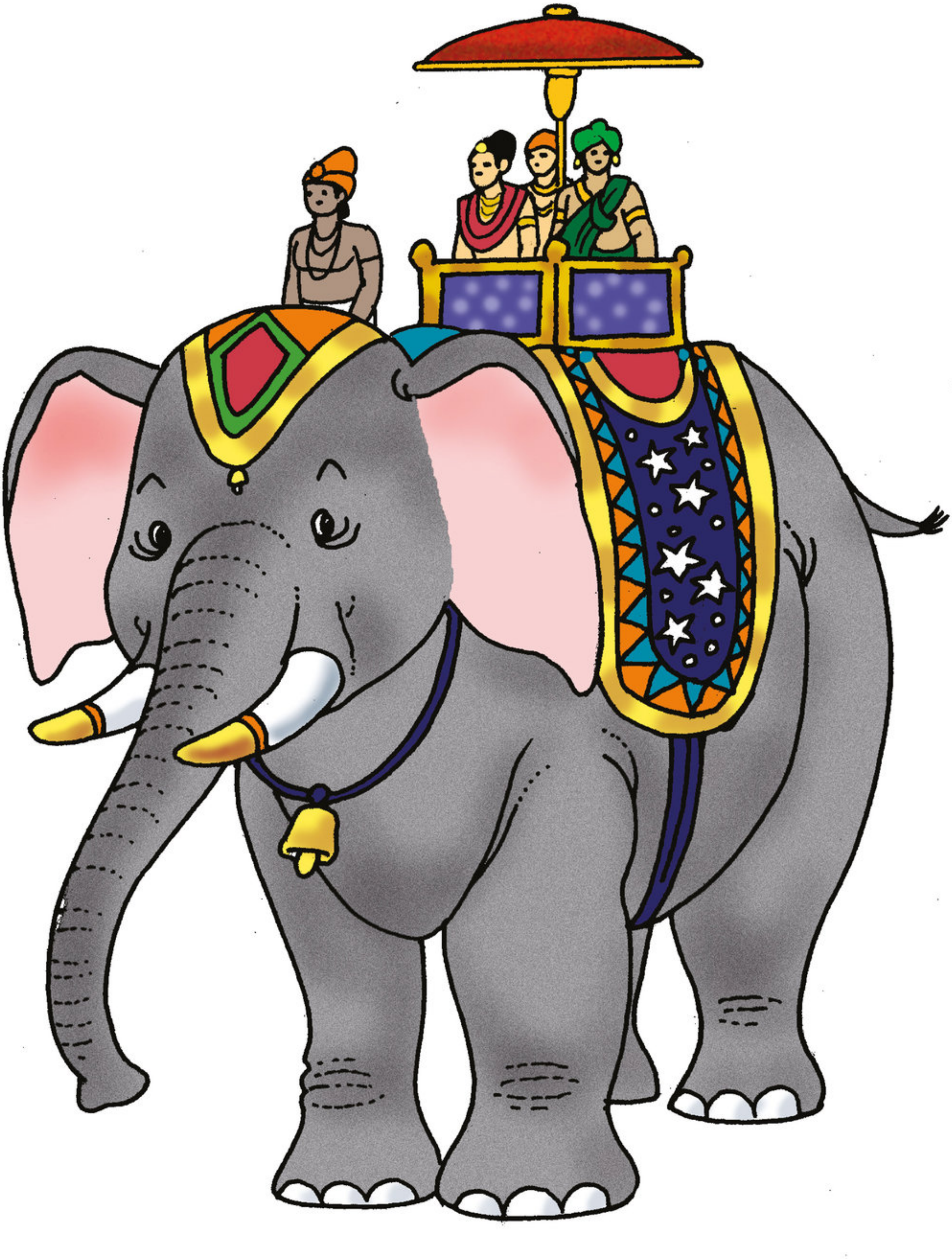

इतिहास के कुछ रोचक तथ्य

1. 2300 वर्ष पहले मौर्य शासकों के सम्राट, अशोक वर्धन के समय में पार्वती और लक्ष्मण रहते थे। वे पाटलीपुत्र में रहते थे जहाँ आज के युग में पटना शहर है।

2. बौद्ध धर्म अपनाने के बाद अशोक ने युद्ध करना बन्द कर दिया। कलिंग की लड़ाई में रक्तपात और विनाश देखने के बाद अशोक बुद्ध के अनुयायी बन गये। अशोक स्तम्भ-भारतीयगणराज्य का प्रतीक उन्हीं के शासनकाल में खोदा गया था।

4

3

इतिहास के कुछ रोचक तथ्य

3. उस स्तम्भ पर उनका पूरा नाम खुदा है-अशोक देवनम पियदस्सी। इसका मतलब है-अशोक जो भगवान के प्रिय हैं और जो देखने में अच्छे हैं।

4. अशोक ने पहला स्तूप बनवाया-वह गोलाकार इमारत, जिन्हें बौद्ध धर्म के लोग पवित्र मानते हैं। विश्व का सबसे प्राचीन स्तूप, आज भी मध्य प्रदेश में साँची में देखा जा सकता है।

5

6

इतिहास के कुछ रोचक तथ्य

5. मौर्य काल में लोग क्या खाते थे? वे ऐसी कई चीज़ें खाते थे जो हम आज भी खाते हैं, जैसे-मीठा चावल, दूध की खीर या पायसम, रोटी, पूरी, घी, दही और आम का अचार भी!

6. वे तीन तरह के वस्त्र पहनते थे- अन्तरीय, जो धोती या लुंगी की तरह बाँधी जाती, कायाबन्ध, जो अन्तरीय को कमर पर रोकने के लिये बाँधने की पट्टी थी और उत्तरीय, जो कपड़े की एक लम्बी पट्टी थी जिसे शॉल की तरह शरीर के ऊपरी हिस्से पर लपेटा जाता था।

This book was made possible by Pratham Books' StoryWeaver platform. Content under Creative Commons licenses can be downloaded, translated and can even be used to create new stories provided you give appropriate credit, and indicate if changes were made. To know more about this, and the full terms of use and attribution, please visit the following link.

Story Attribution:

This story: सम्राट की शोभायात्रा is translated by Manisha Chaudhry . The © for this translation lies with Pratham Books, 2019. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Based on Original story: 'A Royal Procession', by Subhadra Sen Gupta . © Pratham Books , 2015. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license.

Other Credits:

'Samrat Ki Shobhayatra' has been published on StoryWeaver by Pratham Books. Pratham Books is a not-for-profit organization that publishes books in multiple Indian languages to promote reading among children. www.prathambooks.org

Images Attributions:

Cover page: A decorated elephant, by Tapas Guha © Pratham Books, 2005. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 4: Boy and a girl with a Buddhist monk, by Tapas Guha © Pratham Books, 2005. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 7: Children watching a young man meditate, by Tapas Guha © Pratham Books, 2005. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 11: Man blessing a boy, as girl watches, by Tapas Guha © Pratham Books, 2005. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 13: Family of potters, by Tapas Guha © Pratham Books, 2005. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 16: An elephant as part of a royal procession, by Tapas Guha © Pratham Books, 2005. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 17: Map, King Ashoka's statue, by Tapas Guha © Pratham Books, 2005. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 18: Stupa & pillar inscription, by Tapas Guha © Pratham Books, 2005. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 19: Puris & clothes from the past, by Tapas Guha © Pratham Books, 2005. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license.

Disclaimer: https://www.storyweaver.org.in/terms_and_conditions

Some rights reserved. This book is CC-BY-4.0 licensed. You can copy, modify, distribute and perform the work, even for commercial purposes, all without asking permission. For full terms of use and attribution, http://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

सम्राट की शोभायात्रा

(Hindi)

पार्वती और लक्ष्मण, पाटलीपुत्र में रहते हैं पर उन्होंने अपने राजा को कभी नहीं देखा। एक दिन वे दोनों विहार गये तो उन्होंने एक नया दोस्त बनाया। उसने कहा कि राजा को देखने की इच्छा जल्दी पूरी हो जायेगी। मौर्यकाल में दो बच्चों की खुशी की सुन्दर सी कथा!

This is a Level 4 book for children who can read fluently and with confidence.

PRATHAM BOOKS
storyweaver

Pratham Books goes digital to weave a whole new chapter in the realm of multilingual children's stories. Knitting together children, authors, illustrators and publishers. Folding in teachers, and translators. To create a rich fabric of openly licensed multilingual stories for the children of India and the world. Our unique online platform, StoryWeaver, is a playground where children, parents, teachers and librarians can get creative. Come, start weaving today, and help us get a book in every child's hand!